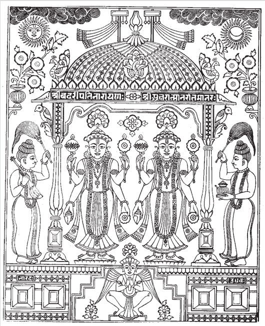

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ ● फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य

प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ६ | अंक : ६३ | जुलाई-२०१२

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम — २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके कार्यक्रम की रुपरेखा — ३

३. मुक्तराज बोरसली (मौलश्री) — ४

४. अपनी वृत्ति महाराज की अनुवृत्ति में लगाना, प.पू. महाराजश्री का आशीर्वचन — ६

५. श्री स्वामिनारायण म्युजियम वस्तु परिचय — ९

६. सत्संग बालवाटिका — ११

७. भक्ति सुधा — १३

८. सत्संग समाचार — १६

॥ आत्मीयम् ॥

चातुर्मास का समय आषाढ शुक्ल ११ से प्रारंभ हो गया है। सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का विशेष भजन-भक्ति करने के लिये यह समय बहुत उत्तम बताया गया है। साढे चार महीने तक नाम स्मरण की माला, भजन-भक्ति, कीर्तन, प्रदक्षिणा, सत्शास्त्र वांचन, साष्टांग दंडवत इस तरह नियम में से कोई एक नियम ले सकते है। उपरोक्त सभी नियम कठिन नहीं है। इसीलिये ये नियम भगवान ने बताये जिसे हम सरलता से पालन कर सकें। यद्यपि इस वर्ष अधिक भाद्र पद-पुरुषोत्तम मास आ रहा है। जिससे सभी को एक मास अधिक भजन करने का अवसर मिलेगा। हमें ऐसे सत्संग का योग मिला है। इसलिये हम भाग्यशाली है। जगत के अन्य लोगों को यह अवशर कहाँ से मिल सकता है।

अधिक भाद्रपद - पुरुषोत्तम मास के अवसर पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिरमें तथा श्री नरनारायण देव के सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री की आज्ञा से यह उत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर दर्शन करके सभी हरिभक्त अपने जीवन को कृतार्थ करें।

शास्त्री स्वा. हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण
(महंत स्वा.) श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालूपुर

हरिभक्तों को अधिक पुरुषोत्तम मास (अधिक भाद्रपद) में यजमान बनने के लिये

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में अधिक पुरुषोत्तम (अधिक भाद्रपद) मास में वर्ष के भीतर आनेवाले सभी उत्सवों को सुंदर ढंग से मनाने का आयोजन किया गया है। इस उत्सव में जिन्हे यजमान बनने की इच्छा हो वे मंदिर की आफिस में जाकर अपना नाम लिखवा दें।

अपने आगामी उत्सव

श्रावण शुक्ल-८ : ता.२६-७-१२ गुरुवार - श्री स्वामिनारायण मंदिर, दिल्ही पाटोत्सव।
श्रावण कृष्ण-५ : ता.७-८-१२ मंगलवार - श्री स्वामिनारायण मंदिर, जयपुर पाटोत्सव।
श्रावण कृष्ण-८ : ता.१०-८-१२ शुक्रवार - श्री कृष्ण जन्माष्टमी मूली मे मंदिर का उत्सव।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

२९ मई से १२ जून

अमेरिका I.S.S.O. के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर - न्युजर्सी रजत जयंती पाटोत्सव तथा I.S.S.O. के अन्य चेप्टरो में पदार्पण ।

(जून-२०१२)

१३-१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर - अंजार (कच्छ) पदार्पण ।

१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर, खोखरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर, वडनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर, मोटा धरोडा (पंचमहाल) सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर, डांगरवा पदार्पण ।

२२. श्री जिगरभाई दीपकभाई के यहाँ कुबडथल गाँव में पदार्पण ।

२२-२३-२४ मुंबई में वाली (राज.) के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित सत्संग शिबिर में पदार्पण ।

२६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री रतीभाई खीमजीभाई पटेल (ट्रस्टी) की तरफ से आयोजित श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव को षोडशोपचार विधिसे अपने हाथों सम्पन्न किये ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, साणंद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

सर्वोपरि श्री हरि के ८वें वंशज प.पू. लालजी महाराजश्री की अमेरिका की सत्संग यात्रा

सर्वोपरि संप्रदाय के सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्र प्रसादजी महाराज श्री २२ मई से ६ जून तक अमेरिका की धर्मयात्रा में पधारे थे । सर्वप्रथम शिकागो के श्री स्वामिनारायण मंदरि में तथा वहाँ से एटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर में युवको को तथा बालकों को सभा में आशीर्वाद देकर आनंदित किये थे । सभी भक्तों को मंदिर में दर्शन करने के लिये प्रेरणा किये थे । वहाँ से आइ.एस.एस.ओ. के निर्माण हो रहे वायरन के मंदिर में पधारे थे । वहाँ से प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराज श्री साथ में न्युजर्सी विहोकन मंदिर के २५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पधारे थे । न्युजर्सी मंदिर में श्री हरि के ६ठ्ठे, ७वे, ८वे वंशज ने ठाकुरजी का अभिषेक करके आरती उतारकर लाखों हरिभक्तों को दर्शन का सुखप्रदान किया था । प.पू. लालजी महाराजश्री संत-पार्षदों के साथ वोशिंग्टन पधारे थे । जहाँ पर पहुँचकर वहाँ के हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । प.पू. लालजी महाराजश्रीने अमेरिका के धर्मप्रवास के अवसर पर इलोनोइस ज्योर्जीया, न्युयोर्क, न्युजर्सी, मेरीलेन्ड तथा डेलापर में हरिभक्तों के द्वारा पदार्पण करके सभी को सुखी किया । सभी को श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय के साथ भक्ति करने की आज्ञा किये । युवको तथा बालको को प.पू. लालजी महाराजश्री के आगमन से आत्मशक्ति तथा प्रेरणा मिली ।

(आई.ए.एस.ओ. श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, यु.एस.ए.)

मुक्तराज बोरसली (मौलश्री)

साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

महाराज के समयकालीन नंद संतो द्वारा रचित कीर्तनो को सुनकर अथवा लेखक संतोने शास्त्रों में जो वर्णन किया है या महाप्रभुने अपने मुखों से परावाणी रुपी वचनामृत को अंवतरित करके सत्संग का बड़ा उपकार किया है। जिसके श्रवण - वांचन करने से शरीर रोमांच हो उठता है। जिसका कोई पार नहीं पाया। भव ब्रह्मादिक से अक्षर तक किसीने श्रीहरि के स्वरुप को सम्पूर्ण नहीं जा सके। वेद जिन्हे नेति-नेति कहते हैं। हजारो मुख से भी जिसका गुण गाना संभव नहीं। ऐसे श्रीजी महाराज के मनुष्य स्वरुप में पांचसौ परमहंसोने अनंतबार दर्शन किया तथा प्रभु के पास अनंतबार बैठकर आनंद का अनुभव किया था। अपने संप्रदाय में कितने मुक्त आज भी देह के साथ विद्यमान है। जो मनुष्य के रुप में नहीं बल्कि वृक्ष के रुप में दर्शन का लाभ देने के लिये स्वामिनारायण भगवानने उन्हें तीर्थो में रखा है। लेकिन हम सभी के अद्यतन जीवन में भागदौड होने से तथा भौतिकता की आंख पर पट्टी होने से इन दिव्य मुक्तो के दर्शन की इच्छा ही नहीं होती।

भगवान स्वामिनारायण के साथ ५०० परमहंसो का जिसने दर्शन किया हो, अक्षरधाम के मुक्तों का अनंतवार जिसने दर्शन किया हो, अनेकों बार श्रीहरिके मुख से जिसने वचनामृत सुना हो तथा प्रेमानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, अयोध्याप्रसादजी महाराज जैसे अनेकों कवियों के मुख से जिसने कीर्तन सुना हो ऐसे अक्षरधाम के मुक्त जेतलपुर धाम में देवसरोवर के किनारे प्रसादीकी वाडी में मौलश्री मुक्तराज वृक्ष के रुप

में विराजमान है। संप्रदाय में कितने वृक्ष के रुप में आज विद्यमान है जिन्होंने महाराज का प्रत्यक्ष दर्शन किया है। उसमें से जेतलपुरधाम में सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम बोरसली (मौलश्री) आज भी विद्यमान है। इसी मौलश्री के नीचे महाराज अनकों बार सभा किये हैं। इसी मौलश्री के नीचे बैठकर आत्मचिन्तन करते थे। क्योकि इसी मुक्त की सेवा लेकर महाराज प्रसन्न होते थे। जेतलपुर में मौलश्री के रुप में मुक्तराज आज भी दर्शन दे रहे हैं। इस मुक्तराज का भाव से दर्शन किया जाय तो सर्वमनोरथ सिद्ध होते हैं। जन्मजन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। चिन्तामणी या कल्प वृक्ष के समान यह वृक्ष सभी के सर्वविधसंकल्प को पूरा करनेवाला है।

इस मुक्तराज मौलश्री के फूल के हार को महाराज हजारो बार अपने गले में धारण किये थे। आज भी यदि कोई इस मौलश्री के फूलों का हार बनाकर बलदेव जी को धारण करता है तो उसके जीवन में कोई कमी नही रहती। जैसे स्वयं श्रीहरि उसमाला को धारण कर रहे हैं ऐसी अनुभूति होती है। पूनम के दिन बलदेवजी भगवान

के दर्शन के लिये आनेवाले हरिभक्त मुक्तराज मौलश्री का भाग्य से ही दर्शन करते होंगे। जो प्रसादी की वाडी में आज भी विराजमान हैं।

जिस महाप्रभु का इस मौलश्रीने अनंतबार दर्शन किया हो उस मुक्तराज के दर्शन एवं परिक्रमा से इच्छित फल की प्राप्ति होती है। अमूल्य समय देकर भी दर्शन प्रदक्षिणा करनी चाहिये। विना प्रयास के अक्षरधाम की दिव्यता का अनुभव होगा।

श्रीहरिने स्वमुख से वचनामृत गढडा मध्य-१३ में कहा है कि "भगवान जे जग्या मैं बिराजमान होय ते जग्या पण निर्गुण छे"। इसके साथ ही भगवानने जिन वस्त्रों, को धारण किया हो, अलंकार धारण किया हो, वाहन का उपयोग किया हो, सेवा करनेवाले सेवक, खान, पानादि जो भगवान के संबन्धमें आया हो वह सब निर्गुण है। इसी तरह जो भगवान के स्वरुप को जाना है वह हमारी तरह से स्वतंत्र हो जाता है और उसकी प्रीति मात्र मुझ में रहती है" वडताल - १२ वें वचनामृत में कहा है कि "धन्य वृन्दावन वासी वडनी छाया रे, ज्यां हरि बेसता" इस कीर्तन को गाओ बाद में उस कीर्तन को गाया। बाद में श्रीहरिने कहा कि जिस तरह परमेश्वर के योग का साहचर्य पाकर वृक्ष का जन्म होने पर भी वह कृतार्थ होता है। इसलिये वृक्ष के नीचे भगवान बैठकर वृक्ष को परमपद का अधिकारी बना देते हैं। गढडा अंत्य-२२ में कहा है कि जिस तरह भगवान की मर्जी हो वैसा ही वातावरण बनता है। अथवा जैसा समय मिलता है उस रुप में भक्त को भगवान की सेवा करने का अवसर मिलता है।

अक्षरधाम के मुक्त को मौलश्री के रुप में भगवान की सेवा का अवसर मिला। ऐसा कृपापात्र मौलश्री वृक्ष आजभी जेतलपुर की प्रसादीकी वाडी में विराजमान होकर सेवा कर रहे है। उन सभी में मौलश्री वृक्ष श्रेष्ठ है।

आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने मौलश्री के नीचे बैठकर अनेकों कीर्तन की रचना की है। जिस में "हरि मिले बोरसली की छैया" के पद ४ खूब प्रसिद्ध है। वर्तमान साइंस भी कहता है कि बोरसली के नीचे बैठने से मन शांत होता है। तथा मन का रोग मिटता है।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५
• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १९-०० • शयन आरती २०-३०

अपनी वृत्ति महाराज की अनुवृत्ति में लगाना, प.पू. महाराजश्री का आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा - हीरावाडी - बापुनगर

ता.१-३-१२ को एप्रोच (बापुनगर) मंदिर के सातवें पाटोत्सव के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभा में कहा कि पहले के समय में बड़े-बड़े ऋषि मुनियों तथा विद्वानों को हजारों वर्ष तक तप करने पर जो प्राप्त नहीं हुआ वह दुर्लभ कल्याण श्रीजी महाराज ने सत्संग के लिये सुलभ कर दिया । महाराज की आज्ञा तथा अनुवृत्ति में रहकर अनपढ किसान भी बड़ी सरलता से अपना आत्यंतिक श्रेय करलेता है।

महाराज को प्रसन्न करना होतो अपने स्वभाव में परिवर्तन करके महाराज के अनुकूल रहना चाहिये । अपनी वृत्ति को महाराज की वृत्ति में लगाना चाहिये । महाराज पानी गरवाने से पहले लोगो के स्वभाव मे परिवर्तन करवाया था । अपने पुराने मंदिरो में जाते है जिन नव मंदिरों को महाराजने बंधवाया था । उन सभी मंदिरो के दरवाजों पर बड़े-बड़े खीले लगाये गये है, अहमदाबाद, वडताल, गढडा इत्यादि मंदिरों के दरवाजे पर सभीने खीला देखा है । इन खीलों को लगाने का एक विशेष कारण यह है कि इससे सुरक्षा होती है। कोई आक्रमण करे तो इससे रक्षा होती है । लेकिन आज तक अपने मंदिरों में आक्रमण हुआ ही नहीं । इस का कारण यह कि अपने संत ऐसा कहते कि जब मंदिर में दर्शन करने जाय तो दरवाजे के भाले में अपने लोभ-मोह-ममता-अहंकार-ईर्ष्या राग-द्वेष इत्यादि को लटका देना चाहिये । ऐसा न करने से मंदिर में मूर्ति तो दिखाई देगी लेकिन मूर्ति में भगवान नहीं दिखाई देंगे । मूर्ति में महाराज का प्रत्यक्षपना का भी अनुभव नहीं होगा । कितनी बार तो ऐसा भी होता है कि मंदिर में मूर्ति से अधिक अगल-बगल के लोग दिखाई देते है । आज ऐसी स्थिति हो गयी है कि किसी सत्संगी को सभा में हार पहनने को न मिले तो गले की कंठी उतारकर मंदिर में वापस दे जाते है और ऐसा कहते है कि अब सत्संग में पहले जैसा कुछ रहा ही नहीं । जगत में जिस तरह व्यवहार प्रधान है ठीक उसी तरह सत्संग में व्यवहार प्रधान होता जा रहा है।

एक गुरुने शिष्य से कहा इस पात्र को धूल से भर दो । शिष्यने वैसा ही किया । फिर गुरुजीने कहा इस पात्र को भोजन से भर दे । शिष्य ने कहा गुरुजी ? यह पात्र तो धूल से भर गया है अब इसमे भोजन नहीं आयेगा । इसी तरह हम भी अपने सारे दोषो के साथ मंदिर में दर्शन करने जाते है, इसलिये प्रभु में भाव कम हो जाता है और वहाँ जाकर दोष देखने लगते है । इसलिये महाराज की आज्ञा में यदि जीवन होगा तो निश्चित ही निष्ठा बढेगी और सत्संग के प्रति जागरुक हो सकेंगे ।

ब्रह्मानंद स्वामी, दादाखाचर, पर्वतभाई इत्यादि पड़े बड़े संत-हरिभक्तो को हम याद करते है किस लिये ? इसलिये कि महाराज के मिलने के बाद वे अपना कुछ रखे ही नहीं । महाराज को समर्पित हो गये । महाराज को प्रसन्न करने में ही अपना सर्वस्व समझते थे । ब्रह्मानंद स्वामी जब महाराज के पास आये तब गहने पहनकर तथा विद्वता का अहं लेकर आये लेकिन महाराज के मिलने के बाद सबकुछ महाराज के चरण में अर्पित कर दिये । गहना तथा जगत का अन्य पदार्थ छोड़ना सम्भव है लेकिन स्वभाव का छोड़ना बहुत कठिन है । दोष को छोड़कर महाराज की आज्ञा में रहना ही सच्ची निष्ठा है ?

दादाखाचर की बात करें तो महाराज दादा के दरबार को छोड़कर अन्यत्र कहीं रहे नहीं, दादा में ऐसा क्या था ? दादा का इतना बड़ा राज्य भी नहीं था कि महाराज उसके लिये

वहाँ रहे । यदि महाराज को राज्य की चाहना होती तो वनविचरण के समय मयारानी ने कहा था कि हे महाराज ! आप मेरे महल में ही सदा के लिये रह जाइये । इस राज्य का शासन आप करो और मेरी दोनो कन्याओं के साथ विवाह कर लीजिये । यह तो एक उदाहरण दिया है - इस तरह तो कितने उदाहरण है । दादा के दरबारगढ में रहने का मतलब यह है कि दादा तथा दादा का सम्पूर्ण परिवार अपनापन छोड़कर महाराज की आज्ञा में रहने लगे थे - आत्मसमर्पित भक्त हो गये थे ।

स्वभाव की बात करें तो महाराज तो स्वभाव प्रकृति से परे है । ये जो करते हैं वह लीला है ? परंतु महाराज के अलांवा अन्योकी प्रकृति स्वभाव स्वतंत्र होता है । अब आप विचार करें कि क्या महाराज दरबार गढ में अकेले रहते थे ? महाराज के साथ संत-पार्षद-ब्रह्मचारी-हरिभक्त भी रहते थे ।५०० परमहंस तथा उनके शिष्य तथा हजारों हरिभक्त आने जानेवालों की संख्या भी उतनी ही । प्रत्येक के अलग अलग स्वभाव, सभी के भोजन की प्रकृति अलग, कोई मीठा, कोई खट्टा, कोई तीखा भोजन करता सभी के अनुरुप दरबार परिवार व्यवस्था करता था । उसमे भी बड़े भाव तथा प्रेम के साथ । आप लोक वचनामृत में दादाखाचर का नाम अधिक वांचे होंगे लेकिन ऐसा एका आया कि दादाने क्रोधकिया हो ।

दादा महाराज को कहते थे कि महाराज ! यह हमारा तन-मन-धन-राज्य सब कुछ आपका है ? महाराज कहते कि दादा ? हमें आपका राज्य नहीं चाहिये ? हमें तो एकांत चाहिये ? महाराज दादा की परीक्षा लेना चाहे उन्होने कहा आपके मुँह से बोलने मात्र से काम नहीं चलेगा ? आप सब कुछ लिख कर दे दीजिये । दादाने तुरंत ही सब कुछ लिखकर दे दिया । महाराजने कहा अब आप का कुछ भी नहीं है । आप सपरिवार यहाँ से निकल जाइये । सभी निकलने लगे तो दादा की दो बहने थी लाडुबा तथा जीवुबा दोनो ने दादा के लिये थोड़ा भोजन रखदी थी, वह इसलिये कि दादा की उम्र उस समय छोटी थी और रास्ते में दादा को यदि भूख लगेगी तो खिला देगी । महाराजने पूछा आप यह हाथ में क्या ली है दोनो बहनोने बतादिया । महाराजने कहाकि सबकुछ में भोजन भी तो मेरा है । आप लोग जो वस्त्र पहनी है उसीमें निकलना है ? उसे भी छोडकर वे लोग बिना संशय के चलदिये । मुख में लेशमात्र भी दुःख नहीं - प्रसन्नता ही दिखाई दे रही थी । थोडा आगे गये कि महाराजने बुला लिया ।

हम लोग अपने बंगले में महाराजश्री के लिये एक रुम खाली कराने की बात करें तो तुरंत यह होगा कि महाराज श्री मंदिर में बराबर हैं । हम प्रतिदिन मंदिर में आपका दर्शन करने आजायेंगे । लक्ष्मणजीवन स्वामी मंदिर में आपकी देखरेख कर लेंगे ।

दादा की इस तरह अनको बाते हैं । दादा के दरबार गढ की दीवाल का प्लास्टर हो रहा था उसी समय महाराज आये और कहने लगे कि यह ठीक नहीं इसे गिराकर फिर बनाओं इस तरह कई बार किये । दादा यह देखकर भी कुछ नहीं बोले । थोड़ा भी मन में खराब विचार नहीं आया, बल्कि यह विचार आया कि महाराज कुछ अच्छा सोचे होंगे । एकबार महाराज ने दादा से कहा कि इस कुम्हड़े को घड़े में डालिये । दादा बिना प्रश्न के घड़े में डालने लगे । घड़े में कुम्हडा जायेगा क्या ?

सत्संग में या घर में छोड देने की भावना हो तो स्थाई एकता बनी रहती है । घर में हर व्यक्ति एक दूसरे के स्वभाव से परिचित हो जाता है । किसको क्या पसंद है और क्या नहीं । इसी तरह महाराज के समय में संत हरिभक्त महाराज के स्वभाव को जान गये थे - उन्हीं के अनुकूल होकर आचरण करते थे ।

उपरोक्त सभी बाते सभी के लिये है, कोई व्यक्ति विशेष के लिये नहीं है । यदि कोई अपने ऊपर मान भी ले तो उसका कल्याण अवश्य होगा । आप सभी लोग रजत-सुवर्ण जयंती उत्सव के बाद आज भी छोटे-बड़े उत्सव को बड़े उत्साह के साथ मनाते रहते है । आप लोग स्वस्थ रहे दीर्घायु हों, मंदिर में बिराजमान घनश्याम महाराज आप सभी का सर्व विधकल्याण करें । आज तो सभी लोग गाड़ी बंगलेवाले है । बाहर से हर प्रकार से सुखी है लेकिन आप लोग अन्तःकरण से समृद्ध हों । यजमान परिवार तथा पाटोत्सव के सहभागी भक्तजनों को समृद्धि प्राप्त हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

TOWNSHIP OF WEEHAWKEN
HUDSON COUNTY, NEW JERSEY

PROCLAMATION

WHEREAS, The International Swaminarayan Satsang Organisation a national charitable organization that builds, looks after and advances the Nar Narayan Dev Satsang outside of India; and

WHEREAS, The Weehawken Temple, the first Shri Swaminarayan temple to be inaugurated in the United States; and

WHEREAS, The Weehawken Temple has participated in 9/11 relief efforts through donations and participation in ceremonies; and

WHEREAS, The Weehawken Temple is an integral part of our multicultural community; and

WHEREAS, This year marks the 25th Anniversary of the Weehawken Shri Swaminarayan temple; and

WHEREAS, **It is the purpose of** The International Swaminarayan Satsang Organisation Its prime objective is "to advance the Sanatan Dharma, in accordance with the principles and teachings of the Swaminarayan Sampraday; and

NOW THEREFORE, **I Richard F. Turner, Mayor of Weehawken on behalf of the Township Council, commend the members of this organization and extend our grateful appreciation for the fine example set by them in contributing to the building community spirit in our Township.**

Richard F. Turner, Mayor
Township of Weehawken
DATED: June 2nd 2012

ન્યુજર્સી વિહોકનના મેયરે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીને
ન્યુજર્સી મંદિરના રજત જયંતી પાટોત્સવ પ્રસંગે ઉપરોક્ત સન્માનપત્ર અર્પણ કર્યું હતું.

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम वस्तु परिचय

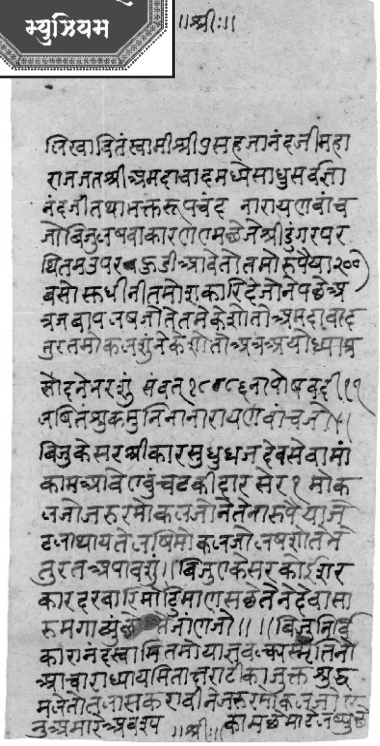

लिखावित स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज जय श्री अहमदाबाद मध्ये साधु सर्वज्ञानंदजी तथा भक्त रुपचंदनारायण वांचजो । बीजु लखवा कारण एम चे जे श्री डुंगरपुर की तम ऊपर हुंडी आवे तो तमो रुपिया २०० बसो सुधीनी तमो स्वीकारी देजो ने अत्र जवाब लखजो । ते तमे कहेशों तो अमदावाद तुरत मोकलशुं ने कहेशो तो अत्र अयोध्याप्रसादने भरशुं सं. १८८६ ना पोष वद-११ लिखितं शुकमुनिना नारायण वांचजो ।

बीजुं केसर श्रीकार सुधुजन देवसेवा मां काम आवे तेवुं चटकादार सेर १ मोकलजो । ने तेना रुपिया जेटला थाय ते लखी मोकलजो । लखशो तेने तुरंत अपावशुं ., बीजुं केसर कोई सरकार दरबार मोटुं माणस छे तेने देवा सारुं मंगाव्युं छे ते जाणजो । बीजुं निर्विकारानंद स्वामी तमो याज्ञवल्क्य स्मृति नो आचार ध्याय मिताक्षरा टीका युक्त शुद्ध मले तो तपास करावीने जरुर मोकजो । एनुं अमारे अवश्य काम छे माटे लख्युं छे।

उपरोक्त पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम में होल नं. १ में रखा गया है।

આ પત્ર શ્રીજી મહારાજે તેમના જમણા હાથ સમાન સ.ગુ. શ્રી શુકાનંદ મુનિ પાસે લખાવડાવેલો છે. શ્રીહરિના સ્વધામ ગમન પહેલાંના ગણતરીના મહિનાઓ પહેલાં જ લખાવડાવેલો પત્ર છે. સ.ગુ. સર્વજ્ઞાનંદ સ્વામિ અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવના મંદિરના આદિ મહંત હતા. ડુંગરપુરમાંથી મૂર્તિઓ વગેરે આવતું હતું તેના સંદર્ભે બસો રૂપિયાની હૂંડી સ્વીકારીને રૂપિયા આપવાની વિગત પત્રમાં છે. વળી શ્રીહરિ કેસર દેવસેવામાં કામ આવે તેવું મંગાવેલું અને યાજ્ઞવલ્ક્ય ઋષિની મિતાક્ષરા ટીકા મંગાવેલી છે. તે બંને બાબતો શુદ્ધ મળે તેવો શ્રીહરિનો આગ્રહ જણાય છે. દેવને અર્થે - ધર્મને અર્થે જે કાંઈ ચીજવસ્તુનો ઉપયોગ થતો હોય તે અતિશય શુધ્ધ હોય તેનો આગ્રહ શ્રીહરિ રાખતા.

શ્રીહરિનો આ અસલ પ્રસાદીપત્ર શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમના હોલ નં. ૧ માં હરિભક્તોના દર્શનાર્થે રાખવામાં આવ્યો છે.

(પ્રો. હિતેન્દ્રભાઈ નારણભાઈ પટેલ)

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव के मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जून-२०१२)

ता. १-६-१२	दिनेशभाई नाथाभाई पटेल, राजूभाई नाथाभाई पटेल - डांगरवावाला।
ता. १६-६-१२	मनजीभाई शिवजीभाई हीराणी - कच्छ
ता. १७-६-१२	श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा पदयात्रा - कलोल से श्री स्वामिनारायण म्युजियम तक। वती मुकेशभाई पटेल, मौलिक पटेल, जनार्दन पटेल।
ता. २६-६-१२	पटेल रतिभाई खीमजीभाई (ट्रस्टीश्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर) वती केतन तथा कपील।
ता. २७-६-१२	स्वामिनारायण मंदिर - निकोल वती महिला मंडल।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिये जून-२०१२ को प्राप्त दान भेंट की रकम

१,३८,८३०-४०	न्युजर्सी अमेरिका श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री को चरण भेंट।
१,०१,०००-००	प्रेमजीभाई भीमजीभाई पीडोरिया - श्रीमती कांताबहन प्रेमजीभाई पींडोरिया - वेकरा (कच्छ)
१,००,०००-००	वनिषा कांतिलाल हालाई - लंदन-केरा (कच्छ)
१,००,०००-००	अरविंदभाई आर. दोंगा - बापूनगर
२०,०००-००	धर्मप्रसाद मणीलाल शुक्ल - अमदाबाद
११,०००-००	अरविंदभाई आर. दोंगा - बापूनगर
११,०००-००	पूनमभाई मगनभाई - अमदाबाद
११,०००-००	धीरजभाई के. पटेल - अमदाबाद
११,०००-००	चावडा मावजीभाई मोहनभाई - आंबली पार्षद वनराज भगत की प्रेरणा से
१०,०००-००	पूनमभाई एम. पटेल अमदाबाद
१०,०००-००	हिरजी वेलजी आसाळी - रामपर - कच्छ
५,१००-००	पुरव पटेल - अमदाबाद
५,१००-००	प्रवीणभाई चतुरदास पटेल - सोला
५,००१-००	कैलासबहन दशरथभाई अमीन - गांधीनगर
५,००१-००	पटेल बाबूभाई शंकरलाल - डींगुचा
५,००१-००	पटेल घनश्यामभाई रेवाभाई - देलवाडा
५,००१-००	डी.के. एन पटेल - मुम्बई
५,०००-००	पुनील जीतेन्द्रकुमार मोदी - अमदाबाद
५,०००-००	घनश्याम एन्जी. इन्डस्ट्रीझ - बोपल
५,०००-००	हंसाबहन प्रभुदास महेता वती सुभाषभाई - मोरबी
५,०००-००	हर्षदकोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर
५,०००-००	कौशिकभाई जोषी - अमदाबाद
५,०००-००	पटेल धर्मिष्ठा बहन - भरतभाई - मारुसणा

श्री नरनारायणदेव गादी के वाली (राजस्थान) के हरि भक्तों के यहाँ मुंबई में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

राजस्थान के वाली तथा अगल बगल के गावो के हरिभक्त वरसों से मुंबई शहर में नौकरी-व्यापार करने के लिये स्थायी हुये हैं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तीन वर्ष पूर्व धर्मकुल के आश्रित श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल (वाली-वर्तमान मे मुंबई) की स्थापना की थी। जिसे तीन वर्ष पूर्ण होते ही मुंबई के सत्संगी भक्तों के आग्रह पर प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. २२-६-१२ को रात्रि में संत मंडल के साथ मुंबई पधारे थे। ता. २३-६-१२ की प्रातः से सायंकाल तक २५ हरिभक्तों के घरो में पदार्पण करके आशीर्वाद दिये थे। पू. महाराजश्री की प्रेरणा से मुंबई में प्रति रविवार को सत्संग सभा में पू. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) स्वा. विश्वस्वरुपदास, जे.के. स्वामी, मुनि स्वामीने सभी हरिभक्तों को श्री नरनारायणदेव गादी में विशेष निष्ठा तथा सत्संग प्रवृति रखने पर बल दिया था।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने वाली के समस्त सत्संगियों को नियम, निश्चय, निष्ठा में देखकर बहुत प्रसन्न हुये और सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री की सेवा में पार्षद वनराज भगत थे।

(श्री धर्मकुल आश्रित श्रीनरनारायणदेव मंडल-वाली)(वर्तमान में मुंबई)

कुसंप विनाशका कारण है ।

(शा. हरिप्रियदास - गांधीनगर)

श्री हरिने भक्तों को एक सुन्दर उपदेश दिया था । वह यह कि वडनगर - विसनगर के भक्तों को दर्शन-कथा का लाभ देकर महाराज दंढाव्य देश में करजीसण गाँव में पधारे । वहाँ के भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर महाराज उस समय का जन्माष्टमी उत्सव करने की आज्ञा कर दिये और यह कहे कि यह उत्सव पूर्ण करने के बाद ही हम आगे जायेंगे ।

करजीसण के भक्त पत्रिका छपवाकर गाँव-गाँव में बंटवा दिया । अगल-बगल के गाँवों में विचरण करने वाले संत भी वहाँ पधारे । लक्षावधिहरिभक्त भी वहाँ पधारे ।

अष्टमी के दिन प्रातः से लेकर सायंकाल तक भजन-भक्ति का वातारवरण बना रहा । कृष्णजन्मोत्सव मनाते हुये सभी को रात्रि में २-३ बज गया, फिरभी प्रातः जल्दी उठकर सभी लोग अपने दैनिक कृत्य करके एक दूसरे से विदाई ले रहे थे । उसी समय श्रीहरिने भक्तों को सम्बोधित करके कहा कि हे भक्तो ! आप लोगों को सुखी रहना होतो एकता में रहियेगा । जब एकता नहीं रहेगी तो बड़ी सत्ता होने पर भी खत्म होजाती है । दुनियां में राज्य करने वाले खाली हाथ गये है । कोई कुछ लेकर गये नहीं है । इसलिये आपस में राग-द्वेष नहीं रखना । छोटा परिवार होते हुये भी कुसंप के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है । छोटा अग्नि का कण भी बड़े महल को जलाकर राख कर देता है ।

एक राजा था । राजा का उद्यान बहुत बड़ा था । जिसमें अनेकों फूल-फल वाले वृक्ष थे । इस तरह का उदाहरण देकर बात करते हुये कहते हैं कि पूरे राज्य में कोई तकलीफ नहीं थी । लेकिन भेंड़ा और नौकरानी में पटरी नहीं खाती थी । राजा के पास बहुत बड़ी घोड़शाल थी । उसमें नौकरानी काम करती थी उसी घुड़शाल में भेड़ा भी रहता था । जब नौकरानी निकले तो भेंडा उसे सींग से मारता और नौकरानी भी डन्डा लेकर उसे पीटती थी ।

सत्संगबालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

इस बगीचे में एक बार ४०-५० बन्दरों का टोला आया । इस हरेभरे फल-फूलों से लदे बगीचे को देखकर बानर बहुत खुश हुये और सभी पेट भरकर फल खा-पी कर जब तृप्त हो गये तो उन सभी के बानर राज ने कहा कि भाई अब आप लोग तृप्त हो गये हो तो यहाँ से आगे चला जाय । बन्दरों ने कहा कि इतना सुन्दर खाने-पीने के स्थान को छोड़कर अन्यत्र क्यो जाने को कहते हैं । तब वृध्द बानर ने कहा कि यहाँ पर घुड़शाल में एक भेड़ा है उसकी और नौकरानी की पटरी नहीं खाती है दोनो में कुसंप है इसलिये यहाँ रुकना ठीक नहीं । यद्यपि वह छोटी बात है फिरभी आगे जाकर बड़ा रुप धारण कर सकती है । हम लोग भाग भी नहीं सकेंगे । वृद्ध वानर की यह बात सुनकर कुछ वानर उसके साथ निकल गये और कुछ वहीं रह गये ।

इधर नौकरानी का तथा भेंड़ा का कलहचरम सीमा पर चल रहा था । सर्दी की ऋतु थी । नौकरानी मस्तक पर आग लेकर घुड़शाल में जा रही थी । उसी समय भेंडे ने पीछे से आकर नौकरानी को मारा नौकरानी आग लेकर गिर पड़ी - आग उछलकर सामने घास के ढेरमें गिर पड़ी । देखते-देखते आग पूरे घुड़शाल में आग लग गयी और घोड़े जल गये ।

उसी समय घोड़ो के उपचार हेतु बैद्यो को राजाने बुलवाया । वैद्यो ने कहा कि इन घोड़ो को बचाने का एक मात्र यही उपाय है कि तत्काल बन्दरों की चरबी का इनके उपर लेपन किया जाय । यह बात सुनकर नौकरोंने कहा कि राजन ! इस समय अपने उद्यान में बहुत सारे बन्दर रहते है, फल खाते है - फूल-फल-वृक्ष का नुकसान करते है । राजाने कहा कि बन्दरों को तत्काल पकड़ लाओ ।

इतना सुनतेही नौकर बन्दूक लेकर दौड़ पड़े और

बन्दूक से बहुत सारे बन्दर मारे गये कुछ वहाँ से भाग निकले ।

जो मरने से बचे बन्दर थे वे भाग कर वहीं पहुँच गये जहाँ पर वृद्ध बन्दर पहले से कुछ बन्दर के साथ निकल कर वहाँ रह रहा था । वृद्ध बन्दर ने सभी से वहाँ का समाचार पूछा तो सभी अथ से इति तक कहानी सुनादी । आप की सलाह न मानने का यह परिणाम था । यह कुसंप का ही परिणाम है ।

श्री हरिने यह बात करजीसण गाँव में सभी को सुनाई । सभी सुनकर खूब प्रसन्न हो गये । सभी ने कहा महाराज ! हम एक सूत्र में बंधे रहेंगे एकता में हम सभी का जीवन होगा । यह बात सुनकर महाराजने सभी को सुखी होने का आशीर्वाद दिया ।

बाल मित्रो ! आप सुने न कि हमें क्या करना है । संप या कुसंप ? छोटा भी कुसंप कितनी कठिनाई में डाल देता है । एक सूत्रता अर्थात् संप में ही श्रीजी की प्रसन्नता मिलती है ।

शुद्धाय नमः (जनमंगल)

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

शुद्ध - भगवान का नाम है । शुद्ध का अर्थ है - पवित्र । श्री हरि सदा शुद्ध स्वरुप हैं । निर्दोष स्वरुप है । चाहे कितना भी अपवित्र जीवात्मा हो वह प्रभु की शरण में आते ही शुद्ध होजाता है, परमात्मा उसे स्वीकार लेते हैं । पापी हो या अपवित्र हो उसे पवित्र कर देते हैं ।

‘‘अपवित्रो पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा ।

यःस्मरेत् पुंडरीकांक्षं सबाह्याभ्यांतरः शुचिः ॥’’

पवित्र हो या अपवित्र मात्र भगवान के नाम स्मरण करने से पवित्र होजाता है । स्नान करने से शरीर शुद्ध होता है । लेकिन भगवान के नाम स्मरण से शरीर के साथ मन भी शुद्ध होता है । आत्मा शुद्ध होता है । भगवत स्मरण के विना किया गया स्नान भी शरीर को शुद्ध नहीं कर सकता ।

एकवार श्रीहरि काठी पार्षदों के साथ विचरण कर रहे थे । साथ में सन्त नहीं थे मात्र काठी पार्षद ही थे । एक दिन ऐसा हुआ कि प्रभु तालाब में स्नान करने गये और यह कहते गये कि मैं पहले स्नान करके इस गहराई नाप लेता हूँ फिर आप लोग स्नान करने जाईये । सुरा खाचर ने कहा कि गहराई नापने के लिये तो हम लोग है न ? प्रभु ने कहा कि आज नहीं ।

श्रीहरि स्नान करके सरोवर से बाहर पधारे । बाद में महाराजने सभी से कहा कि अब आप लोग स्नान करके आवें । सभी स्नान करने गये तो खेलने लगे । एक दूसरे पर पानी उछालने लगे, तैरने लगे स्नान की विधी से न्नान नहीं किये । स्नान करके बाहर आये तो महाराजने कहा कि आप लोग जल स्नान किये रक्त स्नान ? क्यों प्रभु ! आप ऐसा पूछ रहे हों । महाराजने कहा प्रभु स्मरण के विना किया गया स्नान रक्त स्नान कहा जाता है । जाकर आप लोग पुनः स्नान कीजिये । अब सभी धुन बोलते हुये, प्रभु का स्मरण करते हुये स्नान करते हैं, यह देखकर महाराजने कहा कि अब यह सही स्नान है ।

इसलिये जो भगवान के स्मरण के विना स्नान करता है उसके शरीर की शुद्धि नहीं होती । बाह्य शुद्धि नहीं होगी तो आभ्यान्तर शुद्धि कैसे हो श्री । भगवत्स्मरण - नाम स्मरण के साथ किजा जाने वाला स्नान तीर्थ स्नान के समान बताया गया है । जिस तरह पारसमणी के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है इसी तरह भगवान के नाम स्मरण से भगवान का आश्रित जीव पवित्र हो जाता है, उस का सदा के लिये कल्याण हो जाता है ।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : **www.jetalpurdarshan.com**	छपैया : : **www.chhapaiya.com**
महेसाणा : **www.mahesanadarshan.org**	टोरडा : **www.gopallalji.com**
नारायणघाट: **www.narayanghat.com**	

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"कलियुग में भक्तिमार्ग सबसे सरल है"
(संकलन : कोटक वर्षा-नटवरलाल - घोडासर)

परमात्मा को प्राप्त करने का तीन मार्ग है (१) ज्ञान मार्ग (२) कर्म मार्ग (३) भक्तिमार्ग । कलियुग में ज्ञान मार्ग कठिन है । क्योंकि - उसके लिये तीव्र वैराग्य होना आवश्यक है । साथ में विषयों के प्रति तुच्छभाव भी होना चाहिये । लेकिन कलियुग में यह सम्भव नहीं है । इसका कारण हैं कि जीवन में बहुत सारे अवरोधआते रहते हैं । कर्म मार्ग से भगवान को प्राप्त करने के लिये अच्छे कर्म करने पड़ते है । तप यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि उसके सहायक बताये गये हैं । ये सभी कलियुगी मनुष्यों के लिये कठिन है क्योंकि मनुष्य वासना से घिरा हुआ है और जप-तप यज्ञादि कर्म करने का समय भी नहीं है । सभी स्वार्थमय जीवन में फंसे हैं । निष्काम भाव वाले तो बहुत कम लोग होते हैं । इसलिये कर्म मार्ग को भी कठिन बताया गया । जब कि भक्ति मार्ग अत्यन्त सरल है । इसलिये भक्त अपनी निष्ठा से, समर्पित भाव से भगवान की भक्ति करता है तो भगवान उसकी सहायता भी करते हैं, वासना भी धीरे-धीरे कम होने लगती है । जगत का काम कम होने लगता है और - भगवान में भावना दृढ होने लगती है । बाद में उसे ऐसा आभास होने लगता है कि हमें कुछ मिल गया है और आनन्द का अनुभव करने लगता है । भगवान में जिसने मन जोड़ा उसका कल्याण हो गया लेकिन यह ध्यान रखना चाहिये कि एक बार जब भगवान में ध्यान लग गया हो तो फिर उसे तोड़ना नहीं चाहिये ।

भक्ति तीन भाग पर आधारित है : (१) अनन्यता (२) तन्मयता (३) व्याकुलता । उपासना करना अनन्यता कही गयी है । तन्मयता - अर्थात् भगवान के सिवाय कुछ भी नहीं है रात-दिन जिसे भगवान की याद आती है उसे तन्मयता कहते हैं । व्याकुलता - अर्थात् आजतक भगवान हमें क्यों नही मिले ? कब मिलेंगे ? ऐसा भाव जिसमें हों उसे व्याकुलता कहते हैं । एक संत थे, उनके एक शिष्य थे । शिष्यने कहा हमें भगवान का दर्शन करवाईये । संत अपने शिष्य को नदी के किनारे लेगये और कहे कि नदी में डुबकी लगाओ । ज्यों डुबुकी मारी त्यौं गुरुजीने शिष्य के मस्तक को पानी में डुबा दिया । अब भीतर वह तड़पड़ाने लगा । पानी से बाहर आने का बहुत प्रयास किया, लेकिन गुरुजी नहीं छोड़े । बाद में उसका गरदन छोड़े तो मस्तक ऊपर करते हुये कहा कि क्या आप हमें मारना चाहते हैं ? संत ने कहा कि जब पानी में डूबे रहे तब भगवान की कितनी याद किये । जीवित रहने के लिये कितना प्रयत्न किये । इसी तरह भगवान के लिये धबडाहट रहेगी तो निश्चित भगवान प्रत्यक्ष दर्शन देंगे । कलियुग में महाराज प्रगट होकर धाम का मार्ग खोल दिये है । पहले के जमाने में भगवान प्राप्त करना होता था तो लोगों को जंगल में जाना पड़ता था । आज तो हमें जंगल में जाने की जरुरत नहीं । महाराजने मंदिरों का निर्माण कार्य करवाकर गांवो में संतो को रखकर भक्ति के मार्ग को सरलकर दिया । संसार की सामान्य वस्तु के लिये भी कितना श्रम करना पड़ता है फिर भी सम्भव नहीं हो पाती जब कि महाराजने नाम स्मरण मात्र से इहलौकिक सुख तथा पारलौकिक सुख दोनो दे दिया । नम्रता जब तक नहीं आयेगी तब तक

सच्चाज्ञान मिलना कठिन है। पत्थर के ऊपर हजारों वर्ष पानी गिराते रहिये तो भी वह पिघलता नहीं है। लेकिन माटी का ढेला होतो थोड़े पानी से भी पिघल जायेगा। इसलिये अहंकार का त्याग करके जीवन को सरल बनाकर भक्ति के मार्ग पर चलना होगा। भगवत् भक्ति विना समर्पण के सम्भव नहीं है। समर्पण भक्ति मे ही भगवान सामने से चलकर आते हैं और भक्त के वश में रहते हैं।

•

तुलसी माला का महत्व

– सां.यो. कोकिला बा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान के स्मरण में माला का बहुत बड़ा महत्व हैं। माला की परम्परा केवल हिन्दुओं में ही नहीं है बल्कि अन्यत्र इसका महत्व समान है। सभी की प्रवृत्तियां अलग अलग है। फिर भी माला जपने की परंपरा अन्यत्र भी है लेकिन सभी के मूल में हिन्दु धर्म हैं। इन सभी मालाओं में तुलसी की माला श्रेष्ठ है। शास्त्र की दृष्टि से सबसे पवित्र भी है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी उत्तम है। तुलसी की माला से जप किया जाय तो सिद्धि जल्दी होती है। तुलसी समर्पण का प्रतीक है। तुलसी की माला जपते समय या तुलसी चलाते समय समर्पण भाव होना आवश्यक है। तुलसी अर्पण के समय स्वयं समर्पित होने की भावना होनी चाहिये।

माला में १०८ मनका होती है। प्रत्येक क्षण में मनुष्य की स्वाभाविक श्वासं की संख्या ६ हैं। इस तरह २। पल का एक मिनट। इस तरह १ मिनिट में १५ श्वांस लिया जाता है। इस तरह २४ घन्टे में २१६०० श्वांस का विधान मिलता है। १०८ मनका ही एक माला २०० माला फेरने पर श्वासोच्छवास भजन कहा जा सकेगा। लेकिन इतना लंबा समय किसके पास। हाँ इतना अवस्य करना चाहिये कि उपांशु जप हो सके और इस जब का १०० गुना अधिक फल बताया गया है। १०८ मनका वाली माला के जप से श्वासोच्छवास भजन किया हुआ कहा जा सकता है।

बीच की अंगुली से जप किया जाता है। माला फेरते समय तर्जनी अंगुली का उपयोग नहीं किया जाता है। कारण यह कि विशेष स्थान को प्रभावित करने के लिये जप किया जाता है। बीच की अंगुली पर माला रखकर अंगुठे से माला को फेरना चाहिये। प्रत्येक मनके को सरकाने के समय स्वामिनारायण मंत्र का जप करना चाहिये। माला जप पूरा होने पर सुमेरु का उल्लंघन बिना किये वहीं से माला को मोड़ लेना चाहिये। माला को गोमुखी में रखकर जप करना जाहिये। अग्निपुराण में लिखा है कि मंत्र का जप करते समय गिना न जाय और गुप्त रखा न जाय तो उसका कोई फल नहीं मिलता।

नाम जप भक्ति संप्रदाय का मुख्य अंग है। जप की संख्या गिनने का पूर्व काल में अन्य भी उपाय बताया गया है लेकिन माला से जप श्रेष्ठ जपसिद्ध हुआ।

समय बीतते यह एक प्रथा चली की प्रव्रज्या करते समय भी नाम संख्यात्मक जप किया जा सके इसके लिये भी जप माला या अंगुली का साधन बनाया गया। करमाला का भी अलग विधान है। करमाला यात्रा करते समय विधिपूर्वक संभव नहीं है। बाद में काष्ट माला आई जिसमें तुलसीकी माला उत्तम सात्विक सिद्धी देने वाली बताई गयी। मुक्ति की साधिका यह तुलसीकी माला है। शास्त्र की दृष्टि से तुलसीकी माला श्रेष्ठ है। जपमाला के माध्यम से श्रीहरिने कहा कि आप जिस स्थिति में हों हमारे नाम का जप किया करें। हम आप सभी की याद करेंगे। माला मोक्ष का साधन है।

•

पक्ष

– सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेड़ा)

श्रीजी महाराज ग.म. ६० वचनामृत में कहते हैं कि जिस तरह अपने संगे सम्बन्धि– माता – पिता प्रिय होते हैं और उन्हीं का पक्ष रखते हैं उसी तरह भगवान का भी पक्ष रखना चाहिये । लेकिन भगवान के भक्त का पक्ष रखना बड़ा कठिन है । यदि भगवान को तथा भगवान के भक्त को या संतो की महिमा समझ में आ जाय तो अलभ्य लाभ होता है । श्रीजी महाराज कहते थे कि यदि कोई भगवान के भक्त को दु:खी करता है या मारडालता है तो उसे ब्रह्म हत्या का दोष लगता है लेकिन उस भक्त की रक्षा करने वाला कदाचित मरजाता है तो पंचमहापातको से वह रहित हो जाता है । अन्त में वह अक्षरधाम में जाता है । अपने संप्रदाय में शूरवीर भक्तों की कई कथा आती है ।

सोरठ में धारी नामक शहर में जादवभाई नाम का एक भक्त रहता था । जाति से वह वणिक था । व्यापार करता था । लेकिन संयोगवश उसके व्यापार में कमी होने लगी जिससे वह कर्जदार हो गया । सम्पति बेचकर भी कर्ज उतार नहीं पाये – इतना अधिक कर्ज था । अब उसे जेल में डाल दिया गाया । सारे गाँव के वणिक उसे जेल में मिलने गये । उसमें एक अपना हरिभक्त भी था । वह भी जेल में मिलने गया । वहाँ देखा तो जादवभाई का भागीदार था वह स्वामिनारायण वाला नहीं था इसलिये उसे घोड़ी कर ले गये और यह भी कहते गये कि तुम स्वामिनारायण की कंठी तोड़ दो तो तुम्हे भी छोडा देंगे । लेकिन जादवभाई ने कहा कि गला कट जायेगा तो भी कंठी नहीं तोड़ेंगे । जादवभाई की दृढता देखकर कुसंगी सभी वहाँ से चले गये । जो दूसरा सत्संगी था वह सुन रहा था उसे सहन नहीं हुआ इसलिये तुरंत अपने घर जाकर भाईयों से कुसंगियो की वात कहीं और एक दृढ निश्चयी सत्संगी की वात की यह सुनते ही तीनो भाई पैसा लेकर जादवभाई के पास आये और पैसे भरकर उन्हे छुड़ा ले गये । इतना ही नहीं उन्हें पुन: व्यापार करने की मदद भी कर दिये । इस वात की खबर गढपुर में महाराज को हुई । महाराज बहुत प्रसन्न हुए और उनभाईयों को गढपुर के उत्सव में बुलाकर हार पहनाकर सुखी किये और अंत समय में उन्हें अपने अक्षरधाम ले गये ।

एकवार मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी जेतलपुर महाराज के पास चलकर जा रहे थे । रास्ते में कारेली गाँव आया । वहां का महंत खराबदास बाबा था । उसने अपने शिष्यों के साथ रास्ते में आकर दोनो संतो को अपने मठ में लेजाकर बन्द करके गाटली–मारी करने लगा । इतने में गाँव का एक पहलवान उस आश्रम में आया तो देखा कि ये तो स्वामिनारायण के साधु हैं उन्हें यहाँ कौन बन्द किया है । आते ही कहा ''बाबा इन्हें छोड़ दो । उसने मना किया तो उसे धक्का मारकर गिराकर सन्तों को वहाँ से मुक्त करवा दिया । बाद में संतो ने कहा कि तुम कुछ मांगो । उस पहलवान ने कहा कि जिस तरह हम आपको वहाँ से मुक्त करवाये है इसी तरह आप भी मुझे इस संसार से मुक्त करवाईयेगा । दोनो संत जैसे तैसे जेतलपुर महाराज के पास पहुंचते हैं । वहाँ पर आपवीती सभी बातें कहते हैं । सुनकर तुरंत महाराज ने मुक्तानंद से कहा कि उस पहलावन को जिस तरह से वचन दिया है हम उसे अवश्य पूरा करेंगे । अपने धाम में लेजायेंगे । अन्त में लेभी गये ।

अपने संप्रदाय में बहुत सारे भक्त हुये है जिन्होंने शिरकटाकर महाराज का पक्ष रखा है । ऐसे भक्तों के गुण अपने में आवे ऐसी श्री नरनारायणदेव के तथा पूज्यागादीवाला के चरणों में प्रार्थना ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीहरि के अन्तर्ध्यान की तिथी तथा रथयात्रोत्स्व सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से एवं कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन में प्रसादी के सभा मंडप में ज्येष्ठमास शुक्ल-१० को श्रीहरि के अंतर्ध्यान तिथि के निमित्त विरह के कीर्तन त०ा कथा का आयोजन किया गया था। जिस में संत हरिभक्त भाग लिये थे। बाद में ठाकुरजीकी राजभोग आरती हुई थी। सभी भक्तजन दर्शन के बाद प्रसाद ग्रहण किये थे। ज्येष्ठ शुक्ल-३ ता. २२-६-१२ को श्री नरनारायणदेव के समक्ष ठाकुरजी का रथ विराजमान करके पुजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी तथा अन्य संत मंडलने ठाकुरजी की पांच आरती उतारकर भक्तों को मूग-चना-जामुन का प्रसाद दिया गया था। श्री नरनारायणदेव उत्सवं मंडल ने ठाकुरजी के समक्ष रथयात्रा के पद गाये थे।

(शा. नारायणमुनि स्वामी)

आदरज धाम में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से संप्रदाय में जिसका नाम अन्नकूट के नाम से जाना जाता है ऐसे प्रसादी के आदरज गांव में स.गु. स्वा. रामकृष्णदासजीकी प्रेरणा से भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है।

इस उपलक्ष्य में ता. २०-५-१२ से २४-५-१२ तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। जिस के वक्ता स.गु.शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) तथा स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा) सह वक्ता स.गु.स्वा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर) ने सुन्दर कथा का रसपान कराया था। इस के अलांवा तीन दिन का विष्णुयाग, ११ संहितापाठ, संतो द्वारा व्याख्यान माला, छप्पन भोग, अन्नकूटोत्सव इत्यादि कार्य जुंडाल गाँव के युवक मंडलने किया था। उत्सव का प्रारम्भ प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से दीपक प्राकट्य के साथ हुआ था। साथ में वक्ता लोगों का पूजन भी किया गया था। इसके अलांवा इस मंदिर में स.गु. मुक्तानंद स्वामी, स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी, स.गु. नित्यानंद स्वामी, स.गु. चैतन्यानंद स्वामी की स्मृति में अष्टस्तंभी कलात्मक छत्री का उद्घाटन तथा आदरज लीला की पुस्तिका का विमोचन हुआ था। दाताओं का सन्मान प.पू. बड़े महाराजश्री ने किया था। समस्त बहनों की गुरु प.पू. गादीवालजी दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये पधारी थीं। अनेकों धाम से संत त०ा सां.यो. बहने भी पधारी थी। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। उनके आगमन पर भव्य स्वागत किया गया था। उन्हीं के वरद् हाथों वेदविधिसे ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। बाद में विष्णुयाग तथा कथा की पूर्णाहुति करके आरती उतारे थे।

अन्त में प.पू. महाराजश्रीने सभा में हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र प्रसंग में धमासणा गाँव के भक्तों की सेवा सराहनीय थी। उत्सव के मुख्य यजमान नारायणदास पटेल परिवार था। समग्र मूर्तियों के यजमान तथा सिंहासन के यजमानश्री ईश्वरदास पटेल परिवार (मोखासण) वती महेन्द्रभाई तथा शैलेषभाई (यु.एस.ए.) थे। समग्र उत्सव के आयोजक स्वा. रामकृष्णदासजी तथा मार्गदर्शक स्वा. रघुवीरचरणदासजी थे। सभा संचालन स्वा. सत्यप्रकाशदासजी (मूली) ने किया था। (घनश्यामभाई पटेल उवारस, महोतली ठाकोर - आदरज)

वडनगर मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से तथा श्री कांतिलाल कचरालाल भावसार (वडनगर) वती पुत्र श्री अनीलभाई तथा श्री संजयभाई के यजमान पद पर गुजरात की

पौराणिकनगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का ५१ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

ज्येष्ठ कृष्ण १२ ता. १६-६-१२ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों अभिषेक हुआ था। इस प्रसंग पर श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन ग्रन्थ का पंचान्ह पारायण स्वा. अभिषेकदासजी के वक्ता पद पर हुआ था.

इस शुभ प्रसंग पर पाटोत्सव के तथा पारायण के यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया गया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने पूजन करके आरती उतारी थी। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, धोलका मंदिर के महंत स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी, हरीजावनदासजी (हिंमतनगर) स्वा. नारायणप्रसाददासजी (महेसाणा) स्वा यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) ने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। प.पू. महाराजश्रीने मनुष्य का कर्तव्य तथा वडनगर भूमि की महिमा समझाकर हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर स्वा. अभिषेकप्रसादजी, घनश्यामप्रकाशदासजी (कल्याणपुरा) स्वा. चन्दर्प्रकाशदासजी, बालमुकुन्द स्वामी, विश्वस्वरुप स्वामीने सुन्दर सेवा का कार्यकिया था। सभी मंदिरों से सन्त पधारे थे। सभा संचालन नारायणवल्लभ स्वामीने किया था। (नवीनचन्द्र एम. मोदी - वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से वैशाख शुक्ल-३ से जेठ शुक्ल-१५ तक सुगन्धित चन्दन को पूरे शरीर पर लेपन करके दर्शन का लाभ दिया गया था। जिसके दर्शन का लाभ दंढाव्य देश के हरिभक्तों को मिला। जेठ कृष्ण-१ को श्रीहरि को केशर मिश्रित जल से अभिषेक कराया गया था। जिसका दर्शन करके हरिभक्त आनंद का अनुभव किये थे। स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में यहाँ की प्रवृत्ति अच्छी चल रही हैं। जिसमें प्रत्येक गुरुवार को रात्रि में ८ से ११ बजे तक प्रसादी के कशलीबाई के घर में सत्संग सभा होती है। प्रति रविवार को ९ से ११ बजे तक किशोर सत्संग सभा करशन पुरा गाँव के मंदिर में होता है। रात्रि ८ से ११ बजे तक महेसाणा मंदिर में जनरल सत्संग सभा की जाती है। जिस में आकर हरिभक्त धन्यता का अनुभव करते हैं। (साधु प्रेमप्रकाशदास - महेसाणा)

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर का ९८ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र भगवान की जन्मभूमि तथा सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराजश्री रमण भूमि अयोध्यापुरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव-हरिकृष्ण महाराज का ९८ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से माणसा के अ.नि. पटेल साकलचंद उमेददास के पुत्र श्री जयंतीभाई पटेल तथा अ.नि. मंगलदास के सुपुत्र प्रवीणभाई एवं उनकी माताजी राई बहन तथा पालिबहन इत्यादि परिवार की तरफ से आषाढ शुक्ल-४ ता. २३-६-१२ को धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस शुभ प्रसंग पर अहमदाबाद स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा छपैया से महंत स्वा. वासुदेवानन्दजी, वडनगर से नारायणवल्लभ स्वामी, स्वा. केशवप्रसाददासजी, स्वा. विष्णुप्रसाददासजी, स्वा. अजयप्रकाशदास, स्वा. उत्तमप्रियदासजी, आनंद स्वामी, भरत भगत, सिकंदर भगत, भूपेन्द्र भगत, सुमीत भगत इत्यादि लोग उपस्थित थे। संतो ने अयोध्या एवं छपैया की महिमा का वर्णन किया था। यजमान की प्रसंशा की गयी थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ का निर्माण कार्य देखकर हरिभक्त खूब प्रसन्न हुये थे। पाटोत्सव के यजमान श्री रमेशभाई, श्री अश्विनभाई तथा श्री विपीनभाई, उत्सव, पथिक पूजन तथा दशरथभाई साकलचंद, विहार, जयन्तीभाई, विष्णुभाई इत्यादि हरिभक्त पाटोत्सव के समय सन्तो का पूजन किये थे।

अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजीने सभी का आभार व्यक्त किया। सभा संचालन वडनगर के महंत नारायणवल्लभ स्वामीने किया था।

(विष्णुप्रसाद गुरु जगतप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल का ७वां पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव विभाग के बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-७ ता. २८-४-१२ को धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के यजमान श्री कौशिकभाई जोशी थे। इस के साथ ही बगल के खाली प्लोट में भव्य होल निर्माण हेतु खात पूजन भी किया गया था। जिसके यजमान श्री आर. पटेल थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों खात पूजन किया गया था। बाद में अन्नकूट की आरती उतारे थे।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, नारायणघाट के महंत स्वामी, कृष्णवल्लभ स्वामी (सुरेन्द्रनगर) हरिचरण स्वामी (धोलेरा) ने प्रसंगोचित उद्बोधन किया था। प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। हरिभक्तों ने होल निर्माण हेतु सेवा की थी।

समग्र प्रसंग में प.भ. रतिभाई खीमजीभाई पटेल (ट्रस्टी) प.भ. गोविन्दभाई, कोठारीश्री अमृतभाई, श्री जगदीशभाई, श्री अरविंदभाई तथा श्री राजूभाई पटेल की सेवा प्रेरणारुप थी। (प्रविणभाई उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाड़ा के ३१ वे वार्षिक पाटोत्सव

<u>आजोल - पांचवी सत्संग सभा</u>

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आजोल गाँव में पांचवी सत्संग सभा ता. १९-५-१२ को हुई थी। जिसके यजमान श्री प्रहलादभाई जीवणलाल पटेल थे। इस प्रसंग पर स.गु. महंत पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) स्वामी रामकृष्णदासजी, स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वा. कुंजविहारीदासजी इत्यादि संत मंडलने सुंदर कथा प्रवचन करके भक्तों को आनंदित किया था। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदास)

राजपुर गाँव में छठी सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा देव स्वामी, पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत) की प्रेरणा से राजपुर गांव में छठी सत्संग सभा का आयोजन ता. २६-५-१२ को किया गया था। यह सभा श्री हरगोविन्दभाई चतुरभाई की तरफ से की गयी थी। इस प्रसंग पर पी.पी. स्वामी तथा रामकृष्ण स्वामी एवं कुंजविहारी स्वामीने भक्तों भगवान की सर्वोपरिता की महिमा समझाई थी। इस प्रसंग पर बहुत सारे भक्त पधारे हुये थे। (श्री ननरारायणदेव युवक मंडल)

हीरावाडी बापूनगर में ७ वीं सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी एवं स्वामी पी.पी. (नारायणघाट) की प्रेरणा से हीरावाणी बापुनगर में ता. २-६-१२ को अ.नि. डाहीबहन पुरुषोत्तमदास पटेल परिवार के महेशभाई तथा परेशभाई की तरफ से हुई थी।

इस भव्य सभा में शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी स्वा. देवप्रकाशदासजी छोटे पी.पी. स्वामी कुंजविहारी स्वामी धर्मजीवन स्वामी इत्यादि संतोने अपने वक्तव्य में भगवान श्री स्वामिनारायण तथा धर्म कुल का माहात्म्य समझाया था। भक्तोने इसकां लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था। (शा. कुंजविहारीदास)

मेघाडीनगर (ताता नगर) ८वीं सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मेघाणीनगर ताता नगर में श्री मंगलदास रामदास पटेल, ईश्वरभाई रामदास, सुरेशभाई, तथा परेशभाई के यजमान पद पर सभा का आयोजन किया गया था। जिस में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाश स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी (नारणघाट) चैतन्य स्वरुपदासजी, धर्मजीवनदासजी इत्यादि संत श्री स्वामिनारायण भगवान के धर्मवंश का माहात्म्य समझाये थे। आये हुये सभी भक्त खूब आनन्दित हुये थे। (स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

चराडा गाँव में नवमी सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट के महंत) की प्रेरणा से

ता. १७-६-१२ को चराडागाँव में नवमी सत्संग सभा श्री रमेशभाई के यजमानपद पर हुई थी।

इस प्रसंग पर महंत पी.पी. स्वामी, चैतन्य स्वामी, कुंजविहारी स्वामी, चन्द्रप्रकाश स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संतो ने भगवान का माहात्म्य समझाया था।

(शा. दिव्यप्रकाशदासजी)

सोखडा गाँव में दशवीं सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, महंत पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री जोईताभाई केशवलाल पटेल के यजमान पद पर ता. २३-६-१२ को सोखडा गाँव में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें चैतन्य स्वामी, कुंजविहारी स्वामी तथा दिव्यप्रकाश स्वामी कथामृत का पान करवाये थे। (को. नारायणभाई)

चांदखेडा में भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से चांदखेडा की हीरामोती सोसायटी में ता. १०-६-१२ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वा. कुंजविहारीदासजीने भगवान स्वामिनारायण की लीला चरित्र पर प्रकाश डाला था। चांदखेडा तथा अगल बगल की सोसायटी के मुमुक्षु इसमें भाग लिये थे।

(चिमनभाई पटेल - चांदखेडा)

मोटा धरोडा (पंचमहाल) में प.पू. महाराजश्री पधारे

पंचमहाल जिले के धरोडा गाँव में सर्व प्रथम वार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे उस समय पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में महाराजश्री का भव्याति भव्य स्वागत किया गया था। गाँव में सुंदर कथा का आयोजन किया गया था। जिस में पू. पी.पी. स्वामी, श्याम स्वामी, यज्ञप्रकाश स्वामी, जे.के. स्वामी इत्यादि सभी संतोने श्री नरनारायण गादी का महत्व समझाया था। ५० हरिभक्तों ने गुरुमंत्र लिये और ५० भक्तों के घरो को प.पू. महाराजश्री पदार्पण किये थे।

ऐसे गाँव में ग्रामवासियों ने अलभ्य लाभ लिया था। अन्त में महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (शा. भक्तिनन्दनदास - जेतलपुर)

ट्रेन्ट - पाटडी से छपैया - पुल्हाश्रम यात्रा तथा ठाकुरजी का राजोपचार

भगवान स्वामिनारायण की प्रागट्य भूमि छपैयाधाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से दोनो गादीवालाजी के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के संकल्प से सां.यो. शांताबा (पाटडी) के प्रयत्न से सर्वोपरि छपैयाधाम में ता. १०-५-१२ से १४-५-१२ तक ठाकुरजी का राजोपचार तथा सत्संगि भूषण पंचाहन पारायण संपन्न हुआ था। इस प्रसंग पर ट्रेन्ट से ५०० हरिभक्त अमदावाद रेलवे स्टेशन से जेतलपुर धाम से आये हुये श्याम स्वामी, उत्तम स्वामी, श्रीप्रकाश स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी) अयोध्या के लिये प्रस्थान किये थे। वहां पर अयोध्या में दर्शन करके ता. ९-५-१२ को छपैया पैदल चलकर पहुंचे थे। छपैया में सत्संगिभूषण की कथा संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) तथा उन्हीं के शिष्य स्वामी भक्तिनंदनदासजीने सुमधुर शैली में की थी। हजारो मुमुक्षु कथा श्रवण करके जीवन कृतार्थ किये थे।

इस प्रसंग पर नाना प्रकार के उत्सव मनाये गये थे जिस में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, रामप्रतापभाई का विवाह, गादी अभिषेक अन्नकूट उत्सव मुख्य था।

ता. ११-५-१२ को दोपहर में प.पू. बड़े महाराजश्री आये उनके साथ स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा अन्य सन्त-पार्षद भी थे। प.पू. बड़े महाराजश्री सन्ध्या आरती करने के लिये नारायण सरोवर पधारे थे। जिसके यजमान श्री बाबूभाई पाटडीवाला थे। ता. १२-५-१२ को प्रातः श्री घनश्याम महाराज का राजोपचार से प.पू. बड़े महाराजने पूजन किया था। बाद में अन्नकूट की आरती-छत्र-चामर-मुकुट इत्यादि श्रीहरि को अर्पण किया गया था। समूह महापूजा में प.पू. बड़े महाराजश्री आरती उतारकर सभा में पधारे थे। जहां पर यजमान परिवारने

महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री आनन्दित होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ता. १४-५-१२ को पूर्णाहुति शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा ब्र. वासुदेवानन्दजीने की थी । आगन्तुक यजमानों ने नूतन निर्माण कार्य हेतु नगद रुपये भेंट दिया था । सायंकाले ४-०० बजे प्रत्येक यात्रिक दर्शन करके विदा हुये थे ।

इस प्रसंग पर शा. भक्तिनन्दन स्वामीने कथा की थी । इसी तरह वारंवार कथा करने के लिये पधारते रहते हैं । ब्र. हरिस्वरुपदासजी, ब्र. पवित्रानन्दजी सभा संचालन किये थे । यहाँ पर छपैया से प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से आत्मप्रकाश स्वामी ६० जितने हरिभक्तों को साथ लेकर पुल्हाश्राम-मुक्तिधाम की यात्रा के लिये निकल पडे । यहाँ पर प्रभु ने १०८ धारा में स्नान करके मुक्तिनाथ प्रभु का दर्शन करकेनारायण कवच इत्यादि का पाठ किया था । भक्तिनंदन स्वामी, श्यामचरण स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी इत्यादि सन्त साथ में यात्रा का लाभ लिये थे । (नारायणभाई तलादी - पाटडी तथा गोविन्दभाई ट्रेन्ट)

घाटलोडिया (नवाविस्तार) में द्वितीय भव्य सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से घाटलोडिया में ता. ३-६-१२ को रात्रि में ८ से ११ बजे तक सभा की गयी थी । जिस में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी, चैतन्यस्वरुपदासजीने कथामृत पान कराया था । इसके साथ घाटलोडिया मंदिर, नारायणपुरा तथा मेमनगर मंदिर की धुन मंडली ने स्वामिनारायण मंत्र की धुन की थी । सभा का संचालन अशोकभाई ने किया था । सभा के यजमान दसीटी के सभी हरिभक्त थे ।

श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल द्वारा प्रति रविवार को तथा ११ को सत्संग सभा रात्रि में ८-३० से १०-३० तक घाटलोडिया में होती है । इससे अगल बगल के विस्तार के हरिभक्त कथा का लाभ लेने पधारते हैं ।

अन्य भक्तजन इस कथा का लाभ लेने पधारे -

संपर्क - रमेशभाई पी. पटेल - ९५७६१२२६०१, भोलाभाई सी. पटेल ९९२५८०५४६३

(रमेशभाई पी. पटेल)

कालीयाणा गाँव में सत्संग प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर धाम में शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल द्वारा प्रतिदिन निश्चय, पक्ष, सिद्धान्त नियम के लिये कार्य किया जाता है । इस कार्यक्रम में श्री डाह्याभाई चेलाभाई भूटिया तथा हीराभाई गाँव के हरिभक्त प्रेरणा रुप बने थे ।

(पथाभाई मलुभाई)

अरोडा (जूना) पाटोत्सव

ता. २२-४-१२ ईडर देश के अरोडा मंदिर का पांचवा पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से जगदीश स्वामी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ था । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । यजमान श्री दिनेशभाई कचराभाई भगत के घर पदार्पण करके मंदिर में पधारे थे । ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती करके सभा में पधारे थे । सभा में यजमान परिवार ने पू. महाराजश्री की आरती उतारकर चरण में भेंट अर्पित किया था । कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी तथा शा. श्रीजीप्रकाश दासजीने पू. महाराजश्री को पुष्पहार से सम्मानित किया था । इस अवसर पर रघुवीर स्वामी वासुदेव स्वामी, विश्ववल्लभ स्वामी इत्यादि संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया था । प.पू. महाराजश्रीने अपने प्रवचन में निष्ठा तथा एकता के ऊपर प्रकाश डाला था और जगदीश स्वामी के कार्य की प्रसंशा की थी । सभा संचालन शा. हरिजीवनदासजीने किया था । अन्त में सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान गमन किये थे । (कोठारीश्री)

मरतोली मंदिर का रजत जयन्ती महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. हरिकेशवदासजीकी प्रेरणा से महंत जगदीश स्वामी के मार्गदर्शन में यहाँ के मंदिर का रजत जयन्ती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का

आयोजन किया गया था । त्रिदिनात्मक विष्णुयाग का भी आयोजन था । ता. १-५-१२ को पाटोत्सव के दिन प.पू. महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया था । बाद में विशाल सभा में यजमान नटुभाई पटेल को प.पू. महाराजश्री हार पहनाकर आशीर्वाद दिये थे । शा.स्वा. हरिकेशवदासजीने प्रेरणात्मक प्रवचन किया था । इसके अलांवा सोकली, टोरडा, इडर, हिंमतनगर, अमदावाद इत्यादि स्थानों से संत पधारे हुये थे । प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । शा. श्रीजीप्रकाशदासजी, सत्य संकल्पदासजीने सम्पूर्ण कार्यभार सम्हाला था । सभा संचालन शा. हरिप्रियादसजीने किया था । (कोठारीश्री)

माणसा विस्तार के अमरापुर (खरके) गाँव में भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमरापुर गाँव में भागवत कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी थे । चौधरी समाज के अन्य गाँव - अलैया, बापुपुरा, माणेकपुरा, माणसा, खरणा इत्यादि गाँवो के हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे । इस प्रसंग पर ग्राम के तथा युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । चंद्रप्रकाश स्वामी, मावदा स्वामी तथा भरत भगत इत्यादि सेवा में लगे रहे ।

(विजय स्वामी - जमीयतपुरा)

वसई (डाभला) में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था । जिसके यजमान चावडा विक्रमसिंहजी थे । भोजन के यजमान सोजा, माणसा, अमदावाद, वसई, जुंडाल के हरिभक्त थे ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, पूज्या गादीवालाजी भक्तो को दर्शन का लाभ देने के लिये पधारी हुई थी । यहाँ के हरिभक्त तथा नरनारायण युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । सभा संचालन पार्षद भगतने किया था ।

(अनिरुद्धसिंह चावडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डेमाई

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर सत्संग सभा की गयी थी । जिस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बाल मंडल ने भजन-कीर्तन किया था । स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजीने कथा का सुदंर लाभ दिया था । जिस में भगवान का माहत्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाया गया था । इस सभा में वायड से रमेशभाई, चंद्रेसभाई, दिनेशभाई, जपनभाई इत्यादि हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे । मंदिर के कोठारी डाह्याभाई तथा रमेशभाई इत्यादि भक्त सुंदर आयोजन किये थे । (साधु चंद्रप्रकाशदास - माणसा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर द्वारा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी तथा सुरेन्द्रनगर के कोठारी स्वामी तथा सत्यसंकल्पदासजी तथा संत मंडल द्वारा मूली देश के गाँवो में सत्संग प्रवृति का आयोजन किया गया था । जिस में रामपरा, जीरागढ, गढडिया, हरिपर, मेथाण, तावी, भद्रेशी में संतो द्वारा कथा करके मूल संप्रदाय तथा गादी स्थान की महिमा समझायी गयी थी ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

सुरेन्द्रनगर मंदिर में कथा-पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री भूपेन्द्रभाई शाह (मुंबई) की प्रेरणा से ता. २१-५-१२ से २५-५-१२ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाह्न पारायण शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा स्वामी सत्यसंकल्पदासजी के वक्तापद पर हुई थी । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २१-५-१२ को पधारे थे । नवनिर्मित श्री ब्रह्मानंद यात्रिक भवन का उद्घाटन करके पू. बड़े महाराजश्री ने स्वा. कृष्णवल्लभदासजी स्वामी की सेवा प्रवृति की प्रसंशा की थी । प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे । प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से सुवर्ण द्वार का उद्घाटन ता. २५-५-१२ को हुआ था । इसके साथ यजमान परिवार का पू. महाराजश्रीने किया था । अहमदाबाद तथा मूली देश से संत तथा हरिभक्त पधारे हुये थे । सभा संचालन

स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया था । संहिता पाठ के वक्ता स्वामी सुव्रतदासजी थे । श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा प्रसंशनीय थी। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से साधु भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से जेष्ठ शुक्ल-१० को श्रीहरि की अन्तर्ध्यान तीथी के निमित्त १२ घन्टे की अखंड धुनि की गई थी। (नरेन्द्रभाई सोनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा

यहाँ के मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज, बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज को वैशाख शुक्ल ३ से ज्येष्ठ शुक्ल १५ तक चन्दन चर्चित स्वरुपा का दर्शन सभी को हुआ । महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी तथा ब्रह्मविहारी स्वामी की प्रेरणा से पुजारी संतोने चन्दन का प्रभु को अनलेपन किया था । ता. ५-६-१२ को केशर स्नान दर्शन का अद्‌भुत लाभ मिला था । केशर स्नान के यजमान श्री प्रविणभाई सुरेलीया थे । यहाँ के हरिभक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्य हो गये ।

(शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी)

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका में आई.एस.एस.ओ. के श्री स्वामिनारायण मंदिर न्युजर्सी का रजत जयंती महोत्सव

श्री नरनारायणदेव देश के आई.एस.एस.ओ. संस्था द्वारा संस्थापित अमेरिका में नव निर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर, न्युजर्सी विहोकन में आज से २५ वर्ष पहले अपने प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. बड़े आचार्य महाराजश्री के अथक परिश्रम से मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से संपन्न हुई थी । मंदिर का २५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव रजत जयंती महोत्सव ता. १८-५-१२ से ३ जून २०१२ तक धर्मकुल परिवार, विद्वान संत तथा देश-विदेश के हजारो हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था । उत्सव के प्रारम्भ में ही प.पू. बड़ी गादीवाला का आगमन हुआ था । सभी बहने दर्शन का आनन्द प्राप्त की थी । इस मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा २४-५-८७ में हुई थी । इस मंदरि को अपना मानने वाले प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २४ मई को यहाँ पधारे थे ।

ता. २८ मई को प्रातः काल से भक्तों का आगमन प्रारम्भ हो गया था । अमेरिका में मेमोरियल डे का उत्सव मनाया गया था, उस समय अपने मंदिर में सत्संगिभूषण के प्रारम्भ में पोथीयात्रा निकाली गयी थी । इस प्रसंग पर विहोकन शहर के मेयर मि. टर्नर का उन्सीलह मि. सोसा ने प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ दीप प्रगट करके कथा का प्रारंभ करवाया था । संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. पी.पी. स्वामीने कथा की थी । प्रारंभ में उनका पूजन किया गया था । पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । १ जून शुक्रवार को हरियाग का प्रारंभ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने किया था । सायंकाल ३ बजे से ५ घन्टे तक प.पू. गादीवालाजी तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी के सानिध्य में सभा का आयोजन किया गया था । सायंकाल श्री नरनारायण युवक मंडल के बालकों द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम किया गया था । २ जुन शनिवार को महापूजा का आयोजन किया गया था । बूलेर्ड इष्ट पर सुंदर नगरयात्रा का आयोजन हुआ था । जहाँ पर सभी हरिभक्त उपस्थित थे । भव्यातिभव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । शोभायात्रा में विहोकन के मेयर, काउन्सीलर, आगेवान तथा वेस्ट न्युयोर्क के मेयर तथा यहाँ के स्कूल के बालक बेन्ड बाजा के साथ जुड़े थे । जिसमें डान्स, गरबा, कीर्तन, धुन इत्यादि का कार्यक्रम किया गया था । शोभायात्रा नदी के किनारे से निकली थी । शोभायात्रा जब मदिर में आयी तब प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से कलश तथा ध्वजारोहण विधिकी गयी थी । प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्री राजाने हवा में रंगबिरंगी बलून फेककर आकाश को गुंजित कर दिया था । सायंकाल ७-०० बजे समग्र हरिभक्त एकत्रित होकर धर्मकुल के पदार्पण कराने का कार्यारम्भ किया । सर्वप्रथम पूर्व प्रमुख का सन्मान किया गया । यजमान तथा मेहमान का सन्मान प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों किया गया । विहोकन के मेयर काउन्सीलमेन तथा सदस्यो ने धर्मकुल का सन्मान किया था । इस प्रसंग में प.पू. बिन्दुराजा तथा सौम्यकुमार तथा सुव्रतकुमार भी हाजिर थे।

श्रीहरिकृष्ण महाराज की रजततुला विधिप.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों की गयी थी। अन्त में सन्तों की प्रेरक वाणी के बाद धर्मकुल का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था।

३ जून को भक्तों ने तीनो भगवान स्वामिनारायण के अपर स्वरुप का दर्शन करके जीवन कृतार्थ किया था। बाद में वेदोक्त विधिसे श्रीहरि का अभिषेक किया गया। इसके साथ शिवपंचायतन की प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी। यह प्रतिष्ठा विधिप.पू. लालजी महाराज के हाथों हुई। अन्कूट आरती का दर्शन लाखो भक्तों ने किया। अमेरिका के प्रत्येक आई.एस.एस.ओ. के चेप्टरों से हरिभक्त आये हुये थे। इस प्रसंग पर नारायणपुरा मंदिर के महंत शा.हरिॐ स्वामीने सभा का संचालन किया था। न्युजर्सी के महंत स्वामी, जेतलपुर के महंत स्वामी, जेतलपुर के पुजारी स्वामी तथा यहाँ के पुजारी महंत स्वामी ने प्रेरणात्मक सेवा की थी। हरिभक्तों की सेवा भी अविस्मरणीय थी। (भक्तिभाई एश. पटेल - प्रमुखश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ पर पधारे हुये नरनारायण स्वामीने कथा कीर्तन किये थे। भगवान का सिंहासन रंगबिरंग ढंग से सजाया गया था। फादर डे के अवसर पर प्रेरणात्मक प्रवचन किया गया। माता-पिता के प्रति आदर्श भाव क्या है, अपनी संस्कृति क्या है इत्यादि पर प्रकाशडाला गया था। कथा-वार्ता, कीर्तन-नीति-नियम चेष्टा इत्यादि किया गया था।

प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षतामें आगामी जुलाई मास में सम्पन्न होने वाले सत्संग शिबिर की सभी को जानकारी हो गयी थी। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (स्ट्रेधाम-लंडन)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाये जाते थे। बड़ी संख्या में हरिभक्त भाग लेते हैं।

ज्येष्ठ शुक्ल-१५ को मुकुटोत्सव तथा जलयात्रा का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर भगवान स्वामिनारायण का अभिषेक विश्वविहारी स्वामीने किया था। जलयात्रा का तथा मुकुटोत्सव का माहात्म्य समझाया गया था.

स्ट्रेधाम लंडन के मंदिर में प्रत्येर रविवार को सत्संग सभा आयोजित होती है। इस सभा में बालक-युवान सभी आते हैं। (स्ट्रेधाम-मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेंड में ४ था पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का चतुर्थ पाटोत्सव ता. १०-६-१२ को प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो की उपस्थिति में मनाया गया था। इस प्रसंग पर भक्तचिन्तामणी ग्रन्थ का पंचाहन पारायण शा. स्वामी हरिॐप्रकाशदासजीने किया था। ता. ९-६-१२ को विष्णुयाग का आयोजन किया गया था। रविवार को प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था। प्रासंगिक सभा में पू.पी.पी. स्वामी, वासुदेव स्वामी तथा योगी स्वामी ने प्रसंगाचित प्रवनच किया था। विशेष रुप से सभी को माता पिता के प्रति प्रेम आदर का भाव रखने के लिये कहा गया। बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी। बहने रसोई का सुंदर कार्यभार सम्हाली थी।

(प्रकाशभाई पटेल)

लुहीसवील (कंटकी) आई.एस.एस.ओ. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कंटकी में सत्संग प्रवृति अच्छी चलती है।

प.पू. आचार्य महाराजश्री न्युजर्सी में पाटोत्सव विधिसम्पन्न करके हरिभक्तो को आशीर्वाद का सुख देने के लिये ३-६-१२ को प.पू. स्वामी, पूर्णानन्द, वासुदेव स्वामी, इत्यादि संतो के साथ पधारे थे। रात्रि ९ बजे पीसबर्ग शहर में गोपालभाई पटेल भोजन किये और रात्रि निवास भी वहीं किये। सायंकाल श्री गोपालभाई के यहाँ सभा का आयोजन किया गया। वहाँ पर सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद देकर सभी को प्रसन्न किये थे।

ता. ५-६-१२ को प्रातः काल कंटकी पधारे थे। वहाँ

श्री धर्मेन्द्रभाई थे यहाँ एकबार भोजन करके सभा में पधारे थे । सन्तों के प्रवचन के बाद पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

ता. ६-६-१२ को ८ हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण किये जिस में परसोत्तमभाई के यहाँ भोजन करने पधारे । उसी दिन श्री विष्णुभाई के यहाँ सभा आयोजित थी । बाद में हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करके हिन्दु टेम्पल में पधारे थे । जहाँ पर पू. महाराजश्री का स्वागत किया गया था । बाद में सभा में पधारे थे । संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । २५० जितने हरिभक्तोने इस सुन्दर कार्यक्रमो का लाभ लिया था।

ता. ७-९-१२ को लुहिस बिल विस्तार में बहुत सारे हरिभक्त पधारे थे जिसमें धर्मेन्द्रभाई के यहाँ भोजन के लिये पधारे थे। सायंकाल अन्य हरिभक्तों के घर पदार्पण करके रात्रि निवास किये थे ।

ता. ८-६-१२ को समर सेट शहर जाने के लिये पधारे थे । वहाँ पर हरिभक्तों के घर पदार्पण किये । श्री डाह्याभाई के यहाँ भोजन के लिये पधारे थे । जहाँ पर कोम्युनीटी होल में विशाल सभा में हरिभक्तोंने प.पू. महाराजश्री तथा संतो का भव्य स्वागत किया गया । २०० जितने भक्तों को आशीर्वाद देकर प्रसन्न किये थे ।

ता. ९-६-१२ को समरसेट से कलिवलेन्ड जाते समय रास्ते में सीनसीनाटी शहर में जयेशभाई कांतिभाई पटेल के यहाँ पदार्पण करके ठाकुरजी का भोग लगाये थे । वहाँ से पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ कलिवलेन्ड के ४ थे पाटोत्सव प्रसंग पर पधारे थे। जहाँ पर कलिवलेन्ड मंदिर के प्रमुख श्री प्रकाशभाई पटेल ने पू. महारजश्री तथा संतो का स्वागत किया था।(प्रकाशभाई पटेल कलिवलेन्ड)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद : कुंदनबहन चिमनभाई कोठारी (उ.८० वर्ष) ता. ५-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

अमदावाद : कान्ताबहन डाह्याभाई ठक्कर ता. १४-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

अमदावाद : कान्ताबहन हिंमतभाई शाह ता. २७-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

धोलका : ठक्कर कान्ताबहन चकुभाई ता. २६-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई हैं।

वडु (ता. कडी) : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व कोठारी श्री कालीदास पटेल ता. २-६-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

कोठंबा (पंचमहाल) : प.भ. सुभाषचंद्र वाडीलाल काछिया (उ. ५५ वर्ष) ता. ९-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

सितापुरा : श्री पटेल कांतिभाई के पिताजी प.भ. नारायणभाई पटेल ता. २५-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

बावला : श्री रतिलाल लालजीभाई ठक्कर के बड़े भाई प.भ. भालजाभाई लालजीभाई ठक्कर ता. २९-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

डेडीयासण : प.भ. दानुभाई मोरी ता. १२-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

बायड : श्री दिनेशभाई के. पटेल के मामा प.भ. रमणभाई एस. पटेल ता. २-६-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

बायड : श्री रमेशभाई तथा नरेशभाई के पिताजी प.भ. बहेचरभाई ता. १०-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

न्यूजर्सी : श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. महेन्द्रभाई चौकसी ता. २७-५-१२ को श्रीहरि का स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।